

## माँ आंभे तुम्हे मैं खत लिखती पर पता मुझे माँलूम नहीं

माँ आंभे तुम्हे मैं खत लिखती पर पता मुझे माँलूम नहीं  
दुःख भी लिखती सुख भी लिखती पर पता मुझे मालुम नहीं,  
माँ आंभे तुम्हे मैं खत लिखती पर पता मुझे माँलूम नहीं

सूरज से पूछा चंदा से पूछा पूछा टिम टिम तारो से,  
इन सब ने कहा अम्बर में है पर पता मुझे मालुम नहीं,

फूलो से पूछा कलियों से पूछा पूछा बाग के माली से,  
इन सब ने कहा अम्बर में है पर पता मुझे मालुम नहीं ,

नदियों से पूछा लेहरो से पूछा पूछा बेहते झरनो से ,  
झरनो से कहा सागर में है पर पता मुझे मालुम नहीं,

साधो से पूछा संतो से पूछा पूछा दुनिया के योगो से  
इन सब ने कहा है हिरदये में है पर पता मुझे मालुम नहीं,  
माँ आंभे तुम्हे मैं खत लिखती पर पता मुझे माँलूम नहीं

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/15480/title/maa-ambe-tume-mai-khat-likhti-par-pta-mujhe-maalum-nhi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |